

## नौकरी की किताब

### सत्र 14: संवाद शृंखला 2, अय्यूब 15-21

#### जॉन वाल्टन द्वारा

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, संवाद शृंखला 2, कार्य 15-21 है।

#### परिचय [00:26-00:58]

जैसे ही हम संवाद अनुभाग में चक्र दो में आते हैं, फिर से, एलीपज, बिलदाद और सोफर प्रत्येक बोलेंगे, और अय्यूब उनमें से प्रत्येक को जवाब देगा। हम इस खंड में किसी भी विशिष्ट छंद को लक्षित नहीं करने जा रहे हैं। और इसलिए, मैं उनकी अलंकारिक रणनीति को खोलने में कुछ समय बिताऊंगा जैसा कि मैंने चक्र एक के साथ किया था। इसलिए, हम प्रत्येक भाषण का सारांश देंगे और फिर प्रत्येक आदान-प्रदान के लिए संक्षेप देंगे, और वह हमें यहां कवर करेगा।

#### चक्र 2: एलीपहाज़ और अय्यूब की प्रतिक्रिया [00:59-2:35]

तो, हम एलीपज से फिर से शुरू करते हैं, जो अब उनका दूसरा भाषण है। यह इस बारे में है कि यह कैसे चलता है। अय्यूब, तेरी झुंझलाहट अपमानजनक है। आप केवल अपने लिए एक गहरा गड्ढा खोद रहे हैं। आपको क्या लगता है कि आप बाकी सभी से इतने बेहतर हैं? जो परिस्थितियाँ आप पर आ पड़ी हैं, उन्हें छोड़कर अपनी परिस्थितियों का विरोध करना बंद करें। यह समस्त मानवता द्वारा साझा किये गये भ्रष्टाचार का परिणाम है। चूँकि दुष्ट लोगों को खदेड़ दिया जाता है, इसलिए तुम्हें इस बात पर विचार करना चाहिए कि तुम्हारे और उनके बीच कितनी समानता है। अय्यूब की प्रतिक्रिया: बात करना आसान है, एलीपहाज़, लेकिन अगर मैं आपकी जगह होता तो मुझे और अधिक प्रोत्साहन मिलता। इस बीच, भगवान, आप मुझ पर हमला क्यों कर रहे हैं? आपने मुझे शत्रुओं द्वारा सताया जाने के लिए छोड़ दिया है, और फिर आप दयापूर्वक अपने आप में शामिल हो गए हैं। यदि आप मेरे दुख का जवाब नहीं दे सकते, तो मुझे मेरे लिए खड़े होने के लिए किसी की जरूरत है। जहां तक मेरी बात है, मैं धार्मिकता के रास्ते पर बने रहने के लिए दृढ़ हूँ, हालांकि मुझे बस मौत का ही इंतजार है।

इसलिए, हम इस प्रतिक्रिया को संश्लेषित करेंगे, और इसे संक्षेप में कहें तो एलीपज़ की सलाह, ईश्वर दुष्टों के साथ कैसा व्यवहार करता है और वह आपके साथ कैसा व्यवहार कर रहा है, इसकी तुलना करके अपने अपराध को पहचानें। आपने धर्मपरायणता को निरस्त कर दिया है। अय्यूब का उत्तर: मुझे भगवान के हमलों से सुरक्षा की आवश्यकता है और मैं अपना मामला उठाने के लिए एक वकील को बुलाता हूँ। मुझे कुछ मदद की ज़रूरत है।

### **चक्र 2: बिलदाद और अय्यूब की प्रतिक्रिया [2:35-3:36]**

यह हमें बिलदाद की बात की ओर ले जाता है। बिलदाद अब संक्षिप्त होता जा रहा है। दुष्टों के प्रति परमेश्वर का न्याय कठोर है, और जो लोग इसके अधीन हैं, जिनमें आप भी शामिल हैं, वैसे, अय्यूब, को ऐसे लोगों के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है जो वास्तव में परमेश्वर को नहीं जानते हैं। अय्यूब उत्तर देता है, आपके आरोपों के बावजूद, मैंने कुछ नहीं किया है, फिर भी भगवान और उसके अकथनीय क्रोध ने मेरे जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया है। मैं एक बहिष्कृत व्यक्ति हूँ जिसका सभी लोग तिरस्कार करते हैं। मुझे विश्वास है कि कोई आएगा और मदद करेगा और जब लगेगा कि सब कुछ खत्म हो गया है, तो मैं निर्दोष साबित हो जाऊँगा। आप, कथित मित्र, मुझसे अधिक खतरे में हैं।

तो बिलदाद की सामान्य सलाह, दिखावा छोड़ दो; दुष्ट लोग नष्ट हो जाते हैं। आप उनमें से हैं। आप भगवान को नहीं जानते. अय्यूब का उत्तर, यह ईश्वर है जिसने मेरा जीवन बिगाड़ा है, मैंने नहीं। एक रक्षक उठेगा और मुझे तुम्हारे आक्षेपों से बचाएगा।

### **चक्र 2: ज़ोफ़र और अय्यूब की प्रतिक्रिया [3:36-4:58]**

फिर हम ज़ोफ़र की ओर बढ़ते हैं। ज़ोफ़र कहते हैं, बेशक, हमेशा की तरह तुम मुझे ठेस पहुँचाते हो। आप जानते हैं कि नियम कैसे काम करते हैं; तुम्हारा स्वधर्म तुम्हें धोखा देता है, क्योंकि सब जानते हैं कि ऐसा घमण्ड दुष्टों का, हे सोपर का, लक्षण होता है।

अय्यूब की प्रतिक्रिया: मुझे एहसास हुआ कि मैं भगवान के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करके बहुत जोखिम उठा रहा हूँ। ध्यान दें कि वह भगवान के खिलाफ कानूनी कार्रवाई का दबाव डालकर ज़ोफ़र को पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर रहा है। तुम्हें एहसास है कि कितने दुष्ट लोग परमेश्वर के

विरुद्ध अहंकार के बावजूद सफल होते हैं। इससे मुझे लगता है कि वह इस बारे में कुछ नहीं करता है। ऐसी दुनिया में, ईश्वर को जवाबदेह ठहराने की कोशिश करना एक जटिल और डरावनी बात है। यदि ईश्वर दुष्टों को लगातार दंड नहीं देता है, तो क्या हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते कि वह धर्मियों की लगातार रक्षा और समृद्धि नहीं करता है? मैं आश्चर्यचकित हूँ। यह वास्तव में जॉब प्रतिशोध सिद्धांत को नकारने के सबसे करीब है। मुझे आश्चर्य है, क्या ऐसा नहीं हो सकता? तो, ज़ोफर के आकलन में, आपका पाप आपका गौरव है; परमेश्वर ने निर्णय कर दिया है कि कौन दुष्ट है। बहुत हो गया, अब कोई बातचीत नहीं। अय्यूब का उत्तर, सिस्टम खराब हो गया है।

### **चक्र 2 का सारांश [4:58-5:54]**

तो, चक्र दो का हमारा सारांश: समग्र रूप से दूसरा चक्र, प्रतिशोध सिद्धांत के आधार पर केंद्रित है कि भगवान दुष्टों का न्याय करता है। संबंधित निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि जो लोग स्पष्ट रूप से न्याय के अधीन हैं वे वास्तव में दुष्ट होंगे। अय्यूब का अंतिम भाषण प्रतिशोध सिद्धांत को अस्वीकार करने के पहले जैसा ही है। उसके दोस्तों ने अय्यूब पर अपना विश्वास खो दिया है, और अय्यूब का ईश्वर के प्रति दृष्टिकोण लगातार बिगड़ता जा रहा है, हालाँकि वह अपनी धार्मिकता पर अटल रूप से जोर देता है। यह अय्यूब का अपने कोने में अपना किला बनाने और ईश्वर से प्रश्न करने के इच्छुक होने का वह हिस्सा है। कानूनी समाधान की उसकी इच्छा बढ़ने पर वह दोस्तों द्वारा प्रस्तावित स्वीकारोक्ति और तुष्टीकरण प्रस्तावों को अस्वीकार कर देता है।

### **पुष्टि (नौकरी) बनाम बहाली (मित्र) [5:54-7:34]**

अय्यूब बहाली के बजाय प्रतिशोध पर जोर देता रहता है। देखिए, धार्मिकता और सामान के बीच यही अंतर है। प्रमाण यह है: आप धर्मी हैं। पुनरुद्धार का अर्थ है: मुझे मेरा सामान वापस दे दो। मित्र पुनर्स्थापना की ओर जोर दे रहे हैं। अय्यूब दोषसिद्धि के लिए दबाव डाल रहा है। यह पुस्तक में वास्तव में एक महत्वपूर्ण अंतर है। याद रखें, यही वह चीज़ है जो अय्यूब की सत्यनिष्ठा को परिभाषित करती है। इसलिए, अय्यूब पुनर्स्थापना के बजाय प्रतिशोध पर जोर देता है।

उनके मित्र प्रतिशोध को एक अवास्तविक और व्यर्थ अपेक्षा मानते हैं। उनके विचार में, अय्यूब को दुष्टों के साथ पहचान बनाने की आवश्यकता है क्योंकि उसके अनुभव निर्विवाद रूप से उसे उसी श्रेणी में रखते हैं। इसे स्वीकार भी कर सकते हैं, अय्यूब; यह वह समूह है जिसमें आप हैं।

तो, हम पाते हैं कि इस चक्र के बाद, चीजें बेहतर नहीं हो रही हैं। अय्यूब को उसके दोस्तों द्वारा तेजी से दुष्टों के बीच रखा जा रहा है। और फिर भी वह परमेश्वर के विरुद्ध अपना मामला आगे बढ़ाता रहता है।

अब अगले खंड में, हम प्रसिद्ध छंदों के छोटे खंडों में से एक पर ध्यान देने जा रहे हैं जो चक्र दो में हैं। और इसलिए, हम इससे विशेष रूप से निपटेंगे और इसे और चक्र दो में इसकी भूमिका को समझने की कोशिश करेंगे, जिसे हमने अभी संक्षेप में प्रस्तुत किया है।

यह डॉ. जॉन वाल्टन और जॉब की पुस्तक पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 14, संवाद शृंखला 2, कार्य 15 - 21 है। [7:34]